Criticism of Austin's theory.

(1) यह मत कि कानून ऊँचे व्यक्ति द्वारा नीचे व्यक्ति को दिया गया आदेश है, उचित नहीं है- प्रथाएँ तथा रीति-रिवाज धीरे-धीरे विकसित होते हैं और उनके विकास में किसी एक निश्चित व्यक्ति का ही योगदान नहीं होता।

(2) ऑस्टिन सम्प्रभुता को असीम और निरंकुश बना देता है → स्वेच्छाचारी शासकों को भी सदैव विद्रोह की आशंका बनी रहती है और उन्हें नैतिक मान्यताओं और सामाजिक परम्पराओं के अनुसार कार्य करना पड़ता है।

(3) यह पता लगाना कठिन है कि प्रभुत्व शक्ति किन निश्चित लोगों के हाथों में निहित होती है। ऑस्टिन के सिद्धान्त की एक बहुत बड़ी कमी यह है कि "निश्चित मानवीय सत्ता किसे माना जाये।

(4) ऑस्टिन ने केवल कानूनी सम्प्रभुता का ही विवेचन किया है- ऑस्टिन यह भूल जाता है कि कानूनी सम्प्रभुता के पीछे एक ऐसी शक्ति निहित है जो कानूनी सम्प्रभुता की अपेक्षा अधिक शक्ति-शाली है।

(5) पाश्विक शक्ति पर आवश्यकता से अधिक बल दिया गया है- ऑस्टिन के मतानुसार - शक्ति और बल ही निर्णायक तत्व है। लेकिन जनता कानूनों का पालन दमनकारी सत्ता के भय से नहीं करती बल्कि इसलिए करती है क्योंकि वह सभ्य व व्यवस्थित जीवन के लिए आवश्यक है।

(6) ऑस्टिन ने अन्य संघों व समुदायों की सत्ता को नकार दिया है- मैकाइवर और लास्की का कथन है कि राज्य के अतिरिक्त और भी अनेक

Scanned By Scanner Go

महत्वपूर्ण समुदाय हैं, जैसे - परिवार, ट्रेड यूनियन, चर्च तथा सांस्कृतिक संघ।

7) ऑस्टिन ने राज्य को अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी पूर्णतया स्वतंत्र माना है।

आलोचकों का कहना है कि अन्तर्राष्ट्रीय जगत में शांति और व्यवस्था बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि राज्यों की निरंकुश सत्ता पर प्रतिबन्ध लगाये जायें।

POL-SC (H)
Part-I
Paper-I

Dr. Rama Kant Pandey
S.R.A.P. College
Bara Chakiya
East Champaran

Scanned By Scanner Go